डॉ. रॉबर्ट चिशोल्म, 1 और 2 सैमुअल, सत्र 10, 1 सैमुअल 15-16

© 2024 रॉबर्ट चिशोल्म और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. बॉब चिशोल्म 1 और 2 सैमुअल पर अपने शिक्षण में हैं। यह 1 सैमुअल 15-16 पर सत्र 10 है। शाऊल ने अपना सिंहासन खो दिया, प्रभु ने एक नया राजा चुना।

इस पाठ में, हम 1 शमूएल 15 और 16 को देखेंगे। 1 शमूएल 13 में, हमने देखा कि शाऊल ने अपनी अवज्ञा के कारण अपना वंश खो दिया।

यहां अध्याय 15 में, वह अपना सिंहासन खोने जा रहा है, और प्रभु उसे घोषणा करेंगे कि उसे अंततः राजा के रूप में उसके पद से हटा दिया जाएगा। तो एक बार फिर, अवज्ञा एक व्यक्ति को परमेश्वर द्वारा दिए गए विशेष विशेषाधिकार से वंचित कर सकती है। तो, अध्याय शुरू होता है, शमूएल ने शाऊल से कहा, मैं वही हूं जिसे यहोवा ने अपनी प्रजा इस्राएल पर राज्य करने के लिये तेरा अभिषेक करने को भेजा है।

तो, अब प्रभु का सन्देश सुनो। तो, यह एक अनुस्मारक है कि राजा के ऊपर प्रभु का अधिकार है। और इसलिए, शाऊल को बस यह याद रखने की आवश्यकता है कि यह प्रभु ही था जिसने उसे राजा बनने के लिए चुना और राजा के रूप में उसका अभिषेक किया, और इसलिए शाऊल प्रभु के अधिकार के अधीन है।

सर्वशक्तिमान प्रभु यही कहते हैं। और फिर एनआईवी अनुवाद करता है, मैं अमालेकियों को उस चीज़ के लिए दंडित करूंगा जो उन्होंने इज़राइल के साथ किया था जब उन्होंने उन्हें मिस्र से आते समय रास्ते में रोक दिया था। यह एक संभावित अनुवाद है.

नेट बाइबिल में, मैंने ध्यान से देखा कि जब इज़राइल मिस्र से आया तो रास्ते में अमालेकियों ने इज़राइल का विरोध कैसे किया। हिब्रू पाठ में, क्रिया रूप वास्तव में परिपूर्ण है, जो अक्सर पूर्ण क्रिया को इंगित करता है। यह संभव है कि इसका तात्पर्य किसी ऐसी चीज़ से हो जो प्रभु करने जा रहा है, मैं दण्ड दूँगा, इसके पीछे कुछ निश्चितता होगी।

लेकिन यह केवल यह कह सकता है कि अतीत में भगवान ने सचमुच दौरा किया था या जो कुछ हो रहा था उसका अवलोकन किया था। परन्तु यह स्पष्ट है कि यहोवा अमालेकियों को उस काम के लिये दण्ड देना चाहता है जो उन्होंने इस्राएलियों के साथ किया था जब इस्राएली मिस्र से बाहर आये थे। और इसलिए यहोवा कहता है, अब जाओ, अमालेकियों पर आक्रमण करो और जो कुछ उनका है उसे पूरी तरह से नष्ट कर दो।

उन्हें मत छोड़ो, उन्हें मार डालो, क्या पुरुष और क्या महिलाएँ, क्या बच्चे और क्या शिशु, क्या गाय-बैल, क्या भेड़-बकरी, क्या ऊँट और क्या गधे। यह बहुत गंभीर लगता है. इसलिए, हमें रुककर इस बारे में थोड़ी बात करने की जरूरत है।

सबसे पहले, अमालेकियों ने इस प्रकार की सज़ा को उचित ठहराने के लिए क्या किया? खैर, अगर हम निर्गमन अध्याय 17 पर वापस जाते हैं, तो हम देखते हैं कि इस्राएली जंगल से यात्रा कर रहे थे और अमालेकियों ने देखा कि वे थके हुए थे, और अमालेकियों ने उन पर बेरहमी से हमला किया। यहोवा ने उस दिन इस्राएलियों को विजय प्राप्त करने की अनुमति दी , परन्तु यहोवा ने यह भी कहा कि वह चाहता है कि अमालेकियों ने जो किया उसके लिए उन्हें नष्ट कर दिया जाए। और वास्तव में, हम व्यवस्थाविवरण अध्याय 25, श्लोक 17 में पढ़ते हैं, मूसा लिखते हैं, याद करो कि मिस्र से तुम्हारे रास्ते में अमालेकियों ने तुम्हारे साथ क्या किया, वे रास्ते में तुमसे कैसे मिले और तुम्हारे सब पीछे के लोगों को मार डाला। जब आप थके हुए और थके हुए थे.

वे परमेश्वर से निडर थे। उन्हें ईश्वर का कोई भय नहीं था। और मुझे लगता है कि यह अमालेकियों के लिए समस्या का एक हिस्सा हो सकता है।

वे ऐसे लोग हैं जिनमें ईश्वर का कोई डर नहीं है। इसलिये, जब तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें उन सब शत्रुओं से जो देश में चारों ओर से घेरे हुए हैं, छुटकारा देता है, और तुम्हें निज भाग करके देता है, तब तुम्हें आकाश के नीचे से अमालेकियों का स्मरण मिटा देना। भूलना नहीं।

एनआईवी का अनुवाद है कि आप स्वर्ग के नीचे से अमालेक का नाम मिटा देंगे। भूलना नहीं। इसलिए, उन्होंने इस्राएलियों पर हमला किया था और क्योंकि उनमें परमेश्वर का कोई डर नहीं था और उनका परमेश्वर के लोगों के प्रति इस प्रकार का रवैया था, प्रभु ने फैसला किया कि वह उन्हें एक राष्ट्र के रूप में मिटा देना चाहता था।

और निःसंदेह, यह समस्याग्रस्त है। जब हम 1 शमूएल 15 में पढ़ते हैं, तो प्रभु अनिवार्य रूप से शाऊल को जो करने के लिए कहते हैं, वह पुरुष, स्त्री, बच्चे से लेकर शिशुओं तक को पूरी तरह से नष्ट कर देना है। वह नरसंहार है.

और इसलिए, कुछ लोग इसे देखेंगे और कहेंगे, बाइबल का परमेश्वर, प्रेम का परमेश्वर कभी किसी को ऐसा करने की आज्ञा नहीं देगा। निस्संदेह, यहोवा ने इस्राएलियों से कनानियों के साथ भी वैसा ही करने को कहा। तो, ऐसा प्रतीत होता है कि हमें यहाँ एक समस्या है।

लेकिन कुछ कारक हैं जिन्हें हमें ध्यान में रखना होगा। मुझे नहीं लगता कि आप कभी भी भावनात्मक रूप से इस पर काबू पा सकेंगे। लोगों को पूरी तरह से नष्ट करने की छवि।

भावनात्मक स्तर पर, आप कभी भी इसके साथ सहज महसूस नहीं करेंगे। लेकिन कभी-कभी हम भावनाओं के आधार पर नहीं चल सकते। हमें चीज़ों को वैसे ही देखना होगा जैसे भगवान उन्हें देखता है।

और इस विशेष मामले में, अमालेकियों ने उसके और उसके लोगों के विरुद्ध एक जघन्य पाप किया था। और ईश्वर हमसे भिन्न श्रेणी में है। हमारे लिए नरसंहार करना, पुरुष, महिला, बच्चे और शिशुओं को नष्ट करना हमेशा गलत होगा, क्योंकि हमारे पास ऐसा करने का अधिकार नहीं है।

लेकिन भगवान कौन है? भगवान कोई दूसरा इंसान नहीं है. ईश्वर तो ईश्वर है. वह एक अलग श्रेणी में है.

हमें यहां एक श्रेणी भेद करना होगा। ईश्वर सृष्टिकर्ता है. वह वह है जो जीवन का निर्माण करता है।

और सारा जीवन उसी से आता है। और इसलिए, सभी जीवन के स्रोत के रूप में, उसका सभी पर अधिकार है। और निर्माता के रूप में, वह उस जीवन को छीनने का निर्णय ले सकता है जो उसने दिया है।

देखिए, हमारे पास वह अधिकार नहीं है क्योंकि हम जीवन नहीं देते हैं। हम निर्माता नहीं हैं. और इसलिए, ईश्वर अद्वितीय है।

और भगवान यह निर्णय ले सकता है कि आप अपने बच्चों को खो देंगे। मैंने तुम्हें वे बच्चे दिये। सभी बच्चे भगवान का आशीर्वाद हैं।

वे भगवान की ओर से एक उपहार हैं. और यदि परमेश्वर चाहे तो उसके अच्छे उपहारों को छीनने का निर्णय ले सकता है। वह मौके-मौके पर इजराइल के साथ ऐसा करता है।

उन्होंने कहा, क्योंकि आप बाल की पूजा कर रहे हैं क्योंकि आप इस झूठे कनानी प्रजनन भगवान की पूजा कर रहे हैं ताकि आप बहुत सारे बच्चे पैदा कर सकें, अनुमान लगाओ क्या? मैं तुम्हारे बच्चों को तुमसे दूर ले जाऊंगा। यह कठोर लगता है, लेकिन भगवान को ऐसा करने का अधिकार है। इसलिए हमें यह याद रखना होगा कि ईश्वर कौन है।

वह सृष्टिकर्ता है, जीवन का दाता है, जिसे उचित समझे तो जीवन छीनने का पूरा अधिकार है। पुराने नियम में भी, ईश्वर बहुत सामूहिक ढंग से सोचता है। हम ऐसा नहीं करते।

हम व्यक्तियों पर अधिक ध्यान केंद्रित करते हैं। लेकिन प्राचीन इज़राइली सोच और ईश्वर की सोच में, वह अक्सर एक समूह के रूप में सोचता है। मूल पाप का हमारा सिद्धांत वास्तव में एक कॉर्पोरेट प्रकार का सिद्धांत है।

हमने आदम में पाप किया। यह आदम के साथ हमारा संबंध है जो हमें पापी बनाता है। हमें ईश्वर पर आपत्ति करने का कोई अधिकार नहीं है।

ख़ैर, मैं वहाँ बगीचे में नहीं था। मैंने फल नहीं खाया. मैं एडम से अलग श्रेणी में आने का हकदार था।

नहीं, हम एडम से जुड़े हुए हैं। जैविक रूप से, हम एडम से जुड़े हुए हैं, और यह पसंद है या नहीं, उसके पाप के परिणाम हमारे सामने आते हैं क्योंकि यह कॉर्पोरेट रूप से इसी तरह काम करता है। हमारी संस्कृति में, हम कभी-कभी कॉर्पोरेट रूप से सोचते हैं, लेकिन इस क्षेत्र में नहीं।

उदाहरण के लिए, एक खेल प्रशंसक होने के नाते, मैं इस उदाहरण का उपयोग करूंगा। मान लीजिए कि हम एनबीए के इतिहास में थोड़ा पीछे जाते हैं और शिकागो बुल्स ने एक और एनबीए खिताब जीता है, और वे उस समय कमिश्नर स्टर्न से चैंपियनशिप रिंग प्राप्त करने के लिए कतार में हैं, और वे अपने काले रंग में हैं और सफ़ेद वर्दी, और अचानक चार्ल्स बार्कले और पैट्रिक इविंग, उन्हें याद करें? वे हॉल ऑफ फेम के महान खिलाड़ी थे जिन्होंने कभी चैंपियनशिप रिंग नहीं जीती क्योंकि बुल्स उन सभी को जीत रहे थे। और मान लीजिए कि वे अपनी टीमों के लिए अपनी वर्दी के अनुरूप हो जाते हैं, और वे कमिश्नर स्टर्न के पास आते हैं और अंगूठी की तलाश में अपना हाथ बढ़ाते हैं, और कमिश्नर स्टर्न क्या कहने जा रहे हैं? तुम लोग यहाँ किस लिये आये हो? आपने काला और लाल नहीं पहना है।

आपको कोई अधिकार नहीं है। आपको अंगूठी का कोई अधिकार नहीं है. यह कॉर्पोरेट इकाई के बारे में है.

यह टीम के बारे में है, और उन्हें आपत्ति हो सकती है, हाँ, लेकिन बिल वेनिंगटन और जुड बुशलर , आप जानते हैं, ये अपेक्षाकृत छोटे खिलाड़ी जो इविंग और बार्कले की क्षमता के करीब भी नहीं थे, उन्हें रिंग मिल रही है, तो क्यों मिलनी चाहिए' क्या हम? और कमिश्नर स्टर्न को कहना होगा कि यह किसी व्यक्ति विशेष के बारे में नहीं है, दोस्तों। आप लोगों ने पुरस्कार जीते, लेकिन यह टीम के बारे में है। या यह ऐसा होगा जैसे आप काम पर जा रहे हों, और आपको पता चले कि कंपनी ख़त्म हो गई है, और आप मांग करते हैं कि आपका कार्यालय खोला जाए, और आपको काम जारी रखने की अनुमति दी जाए क्योंकि आपको पिछले साल एक कर्मचारी के रूप में ए-प्लस रेटिंग मिली थी, और आप अपनी नौकरी खोने के लायक नहीं हैं।

आप वास्तव में एक अच्छे कर्मचारी थे, और इसलिए कंपनी को खुला रहना चाहिए और आपको भुगतान करना चाहिए। नहीं, नहीं, नहीं। यह आपके, व्यक्ति के बारे में नहीं है।

यह इकाई, निगम के बारे में है, और इसलिए हम कॉर्पोरेट सोच के तरीके को समझ सकते हैं। बात सिर्फ इतनी है कि जब नैतिकता, सही और गलत, निर्णय और सजा की बात आती है तो हम आम तौर पर इस तरह नहीं सोचते हैं। हम इसे व्यक्तिगत रूप से देखते हैं, लेकिन ईश्वर कभी-कभी लोगों के समूहों को देखता है।

इस्राएल उसके चुने हुए लोग हैं। अमालेकी इसराइल के दुश्मन थे, और भगवान उन्हें एक कॉर्पोरेट इकाई के रूप में देखते हैं, जीवन के निर्माता, दाता और लेने वाले के रूप में अपनी सोच में, उन्होंने फैसला किया कि वह उन्हें मिटा देना चाहते हैं। वह पृथ्वी पर और अधिक अमालेकियों को नहीं चाहता।

अमालेकियों ने अधिक अमालेकियों को प्रजनन किया। वह चाहता है कि वे चले जाएं, और मुझे पता है कि यह कठोर लगता है, और जैसा कि मैं कहता हूं, मैं इस तरह से चलता हूं, लेकिन यह भगवान के दृष्टिकोण से वास्तविकता है, और इसलिए वह शाऊल से कहता है, हमें इसके बारे में कुछ करने की आवश्यकता है। इसका एक और समस्याग्रस्त आयाम यह है कि ये अमालेकवासी मूसा के समय के बाद भी लंबे समय तक जीवित रहे, और इसलिए हमारे पास अमालेकियों की

बाद की पीढ़ियाँ हैं जिन्हें उनके पूर्वजों के पापों के लिए दंडित किया जाएगा, और हम इस तरह से नहीं सोचते हैं।

आख़िरकार, पुराने नियम का कानून कहता है कि पिता के पापों के लिए किसी बच्चे को दंडित न करें। फिर भी, पुराने नियम में ऐसे कई स्थान हैं जहाँ परमेश्वर ऐसा ही करता है। वास्तव में, मैंने हाल ही में बिब्लियोथेका सैक्रा जर्नल के लिए उस पर एक लेख लिखा था।

जब भगवान पिता के पापों के लिए बच्चों को दंडित करेंगे तो मैं उस पर लगाम लगाऊंगा। आप इसे BibSac के हालिया अंक में पा सकते हैं , जैसा कि हम इसे कहते हैं, इसलिए मैंने इस विषय पर कुछ सोचा है। पुराने नियम में ऐसे बहुत से स्थान हैं जहाँ बच्चों को पिता के पापों के लिए दंडित किया जाता है।

ईश्वर नहीं चाहता कि मनुष्य मानव अदालतों में ऐसा करें, लेकिन वह स्वयं, निर्माता, जीवन देने वाला और लेने वाला होने के नाते, कभी-कभी यह निर्णय ले सकता है कि बच्चों को पिता के पापों के लिए दंडित किया जाएगा, और यही यहाँ हो रहा है। और वैसे, जैसे ही हम वृत्तांत पढ़ते हैं और हम कहानी में उतरते हैं, हमें पता चलता है कि ये अमालेकवासी जो इस समय रह रहे थे, वे मूसा के समय के अमालेकियों से अलग नहीं हैं, क्योंकि हम श्लोक 18 तक पहुँचते हैं, और शमूएल ने शाऊल को याद दिलाया, उसने तुम्हें एक मिशन पर भेजा है, जाओ और उन दुष्ट लोगों, अमालेकियों को पूरी तरह से नष्ट कर दो। इसलिए, वे अभी भी दुष्ट लोग हैं, और अक्सर ऐसा ही होता है।

इस पतित दुनिया में संस्कृतियाँ भ्रष्ट हो जाती हैं, और एक पीढ़ी अपने पास मौजूद सारी भ्रष्टता को अगली पीढ़ी में स्थानांतरित कर देती है, और इस प्रकार अमालेकवासी इस्राएल के दुश्मन बने रहते हैं, एक दुष्ट लोग। तो, शाऊल ऐसा लगता है मानो वह आज्ञाकारी होगा। वह अपनी सेना को बुलाता है, अमालेक शहर जाता है, वह घात लगाता है, लेकिन ऐसा करने से पहले, वह केनियों को चेतावनी देना चाहता है।

केनवासी कौन हैं? आयत 6. ये वे लोग हैं जिन्होंने दयालुता दिखाई। अमालेकियों के विपरीत, जब इस्राएली मिस्र से बाहर आए तो उन्होंने इस्राएल पर दया दिखाई, और इसलिए शाऊल उन्हें चेतावनी देना चाहता है। वह कहता है, चले जाओ, अमालेकियोंको छोड़ दो, ऐसा न हो कि मैं उनके साय तुम्हें भी सत्यानाश कर डालूं।

वे अमालेकियों और इस्राएलियों के करीब रहते थे, और जब उन्होंने हमला शुरू किया, तो उनके पास यह पता लगाने का समय नहीं होगा कि कौन केनी है और कौन अमालेकी है। इसलिए, शाऊल ने केनियों को चेतावनी दी, आपको, ऐसा कहें तो, कुछ समय के लिए शहर से बाहर निकलने की जरूरत है क्योंकि हम अमालेकियों पर हमला करने जा रहे हैं, और हम नहीं चाहते कि इस हमले के दौरान आप में से कोई भी मर जाए। तो, आप देख सकते हैं कि प्रभु इस्राएल के प्रति उनके दृष्टिकोण के आधार पर केनियों और अमालेकियों के बीच अंतर कर रहे हैं।

इसलिए, पद 7 में शाऊल अमालेकियों पर आक्रमण करता है, और पद 8 में वह अमालेकियों के राजा अगाग को जीवित पकड़ लेता है। यह वहीं एक समस्या है. उसे सभी को मिटा देने के लिए कहा गया, और उसने अपने सभी लोगों को तलवार से पूरी तरह से नष्ट कर दिया।

तो, शाऊल यहाँ एक अपवाद बनाता है। वह राजा अगाग को जीवित रखता है। परन्तु शाऊल और सेना ने अगाग और अच्छी से अच्छी भेड़-बकरी, और गाय-बैल, और मोटे बछड़ों, और मेमनों को, और जो कुछ अच्छा था, उन सब को भी छोड़ दिया, और वे उनको नष्ट करना न चाहते थे।

यह बहुत महत्वपूर्ण है. वे वह करने को तैयार नहीं थे जो परमेश्वर ने उनसे करने को कहा था। वे पूरी तरह नष्ट करने को तैयार नहीं थे।

तो, यह उनकी इच्छाशक्ति का कार्य है, इसमें कोई भ्रम नहीं है। परन्तु जो कुछ तुच्छ और कमज़ोर था, उसे उन्होंने पूरी तरह से नष्ट कर दिया। इसलिए, हमें अमालेकियों के पशुओं पर इस प्रतिबंध से कोई आपत्ति नहीं है, जब तक कि वे बीमार पशु हैं।

लेकिन हम अच्छे लोगों को जीवित रख रहे हैं। खैर, यह अच्छा नहीं लग रहा है, और आप इसके बाद परेशानी की उम्मीद कर सकते हैं। तो, पद 10 में प्रभु का वचन शमूएल के पास पहुंचा, और ध्यान दें कि प्रभु क्या कहते हैं, मुझे खेद है।

मुझे खेद है कि मैंने शाऊल को राजा बनाया है। यह लगभग वैसा ही है जैसे भगवान कह रहे हों, काश मैंने ऐसा नहीं किया होता, जो निश्चित रूप से दिव्य सर्वज्ञता के हमारे दृष्टिकोण के लिए समस्याएं पैदा करता है, क्योंकि भगवान जानते थे कि यह होने वाला था। मुझे लगता है कि यह ईश्वर की ओर से अधिक भावनात्मक प्रतिक्रिया है।

मैं, भावनात्मक स्तर पर, उस प्रकार का अफसोस महसूस करता हूं जो मनुष्य तब महसूस करता है जब कोई चीज आदर्श के अनुसार नहीं होती है। मुझे अफसोस है। मुझे नहीं लगता कि इसका मतलब यह है कि भगवान को नहीं पता था कि ऐसा होने वाला है।

मुझे अफसोस है कि मैंने शाऊल को उस भावनात्मक स्तर पर राजा बना दिया है। मुझे यहाँ थोड़ा पानी लाना होगा। माफ़ करें।

वहां, यह थोड़ा बेहतर है। लुब्रिकेटेड होना हमेशा अच्छा होता है क्योंकि वह मुझसे दूर हो गया है और उसने मेरे निर्देशों का पालन नहीं किया है। सैमुअल गुस्से में था.

यह हमें नहीं बताता कि वह किस पर क्रोधित था, और उसने पूरी रात प्रभु को पुकारा। लेकिन मुझे अंदाज़ा है कि सैमुअल भी शाऊल से नाराज़ था। ऐसा कोई संकेत नहीं है कि वह भगवान से नाराज था।

वह बस स्थिति से परेशान था. और वह यहोवा की दोहाई देता है। इस बात का कोई संकेत नहीं है कि वह मध्यस्थता कर रहा था, प्रभु से अपना मन बदलने की कोशिश कर रहा था।

हो सकता है कि यह केवल दर्द और विलाप का रोना हो। तो, शाऊल के पाप ने ईश्वर को पश्चाताप की हद तक, शमूएल को क्रोध की हद तक और मुझे लगता है दुःख की हद तक ला दिया है। अत: भोर को शमूएल उठकर शाऊल से मिलने को गया, और उस से कहा, यह दिलचस्प है, शाऊल कर्मेल को चला गया है।

वहाँ उसने अपने सम्मान में एक स्मारक बनवाया है और मुड़कर गिलगाल की ओर चला गया है। तो, शाऊल यहाँ अपने बारे में बहुत अच्छे विचार सोच रहा है। वह अपने सम्मान के लिए एक स्मारक स्थापित कर रहा है।

वह झिझकने वाले शाऊल से बहुत आगे निकल चुका है जिसे हमने पिछले अध्यायों में देखा था। अब यह सब शाऊल के बारे में है। मुझे देखो, मैंने कितनी बड़ी जीत हासिल की।

खैर, शमूएल उसके पास पहुँचता है और शाऊल कहता है, प्रभु तुम्हें आशीर्वाद दे। मैंने प्रभु के निर्देशों का पालन किया है। शाऊल को लगता है कि वह आज्ञाकारी रहा है।

और मुझे लगता है कि सैमुअल की प्रतिक्रिया हास्यप्रद है। फिर मेरे कानों में भेड़ों की यह मिमियाहट क्या है? मवेशियों का यह अपमान मैं क्या सुन रहा हूं? तो, शाऊल मूल रूप से कह रहा है, मैंने प्रभु की आज्ञा का पालन किया। हमने पुरुष, महिला, बच्चे, यहाँ तक कि जानवरों तक, सभी को मिटा दिया।

और शमूएल कहता है, अच्छा, फिर मैं भेड़-बकरी और गाय-बैल की बातें क्यों सुन रहा हूं? शाऊल ने उत्तर दिया, सैनिक उन्हें अमालेकियों के पास से ले आए। उन्होंने सर्वोत्तम भेड़-बकरियों और मवेशियों को तुम्हारे परमेश्वर यहोवा को बलि चढ़ाने के लिए छोड़ दिया, लेकिन हमने बाकी को पूरी तरह से नष्ट कर दिया। मुझे लगता है कि इसमें उससे कुछ अधिक है।

लेकिन फिर से ध्यान दें, शाऊल, सच्चे स्वभाव का, वह किस पर ध्यान केंद्रित कर रहा है? धार्मिक संस्कार। धार्मिक क्रिया। आप जानते हैं, मैंने सैमुअल को यहां थोड़ा फ्रीलांस करने का निर्णय लिया।

प्रभु चाहते हैं कि सब कुछ नष्ट हो जाए, लेकिन मैंने सोचा कि यह बेहतर होगा यदि हम सर्वोत्तम को बचाएं और प्रभु के लिए बहुत बड़ा बलिदान करें। क्या वह ऐसा नहीं चाहेगा? इस अध्याय में हम जो खोजने जा रहे हैं वह यह है कि आप प्रभु के साथ फ्रीलांस नहीं करते हैं। जब प्रभु आपसे कहते हैं कि वह चीजों को एक निश्चित तरीके से करना चाहते हैं, तो आप उन्हें करते हैं।

आप परमेश्वर की आज्ञा और परमेश्वर की इच्छा में सुधार करने का प्रयास नहीं करते हैं। खैर, मुझे एक बेहतर तरीका मिल गया। मुझे इस बारे में बेहतर विचार मिला.

नहीं, नहीं, नहीं। प्रभु हर विवरण तक आमूल-चूल आज्ञाकारिता की अपेक्षा करते हैं। बस, शमूएल ने शाऊल से कहा, पद 16।

मैं तुम्हें बताता हूँ कि प्रभु ने कल रात मुझसे क्या कहा। मुझे बताओ, शाऊल ने उत्तर दिया। सैमुअल ने कहा, यद्यपि तुम एक समय अपनी दृष्टि में छोटे थे, याद करो जब वह चुना गया था, जब सैमुअल पहली बार चुना गया था, तो उसने कहा, मैं कौन हूं? थोड़ा बूढ़ा मैं, छोटे बूढ़े बेंजामिन से, हमारे छोटे बूढ़े परिवार से।

मैं कौन हूँ? क्या तू इस्राएल के गोत्रों का प्रधान न हुआ? यहोवा ने इस्राएल पर राजा होने के लिये तेरा अभिषेक किया। उस पर प्रभु के अधिकार का एक और अनुस्मारक। अध्याय की शुरुआत इस प्रकार हुई.

उसने तुम्हें यह कह कर एक मिशन पर भेजा, कि जाओ और उन दुष्ट लोगों, अमालेकियों को पूरी तरह से नष्ट कर दो। उनके विरुद्ध तब तक युद्ध करो जब तक तुम उनका सफाया न कर दो। इस बारे में क्या अस्पष्ट है? सम्पूर्ण विनाश.

वे दुष्ट लोग हैं. मैंने घोषणा कर दी है कि उन्हें अब इस धरती पर जीवित नहीं रहना चाहिए।' तुमने प्रभु की आज्ञा क्यों नहीं मानी? तुम क्यों लूटने लगे और यहोवा की दृष्टि में बुरा करने लगे? खैर, शाऊल अभी तक सैमुअल से सहमत होने के लिए तैयार नहीं है।

अपनी सोच में उसने वही किया जो सही था। परन्तु मैंने यहोवा की आज्ञा का पालन किया, शाऊल ने कहा। मैं उस मिशन पर गया जो प्रभु ने मुझे सौंपा था।

मैंने अमालेकियों को पूरी तरह नष्ट कर दिया और उनके राजा अगाग को वापस ले आया। सैनिकों ने भेड़ें और मवेशी ले लिये। अब वह सैनिकों को यहां ला रहा है।

सैनिकों ने लूट में से भेड़-बकरियों और मवेशियों को, जो परमेश्वर को समर्पित थे, सबसे अच्छे से ले लिया, ताकि उन्हें गिलगाल में तुम्हारे परमेश्वर यहोवा को बलि चढ़ाया जा सके। उसने अब सैनिकों को वहाँ भेज दिया है, बस किसी भी हालत में। खुद को ढकने की जरूरत है.

और सैमुअल उस तर्क का उत्तर देने जा रहा है। और वह प्रश्न पूछता है, क्या श्लोक 22 में, क्या यहोवा होमबलि और बलिदानों से उतना ही प्रसन्न होता है जितना कि यहोवा की आज्ञा मानने से प्रसन्न होता है? यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण सिद्धांत है जिसे हम भविष्यवक्ताओं में देखते हैं। यशायाह 1, क्लासिक पाठ।

इस्राएली यहोवा के लिये बलिदान चढ़ाते हैं, और यहोवा कहता है, मैं उन से तंग आ गया हूं। यहाँ तक, मैं बलिदानों में यहाँ तक हूँ। मैं आज्ञाकारिता चाहता हूँ, बलिदान नहीं।

जब आप अवज्ञाकारी होते हैं और बलिदान लाते हैं, तो यह सिर्फ एक पाप को दूसरे पाप में जोड़ता है। पाखंड से लेकर अवज्ञा तक. आज्ञा मानना बलिदान से उत्तम है, और चौकस रहना मेढ़ों की चर्बी से उत्तम है।

पुराने नियम में बलिदान के लिए एक जगह है, लेकिन बलिदान प्रभु की प्राथमिक चिंता नहीं है। आज्ञाकारिता है. यह एक क्लासिक पाठ है.

यह स्पष्टतः इस परिच्छेद का मुख्य विषय है। सैमुअल विद्रोह के लिए आगे बढ़ता है, इसलिए वह सुझाव दे रहा है कि आपने जो किया है वह विद्रोह भविष्यवाणी के पाप के समान है, और अहंकार मूर्तिपूजा की बुराई के समान है। आपने जो किया है, वह भविष्यवाणियाँ और मूर्तिपूजा जितना ही बुरा है।

आप किसी अन्य देवता की भी पूजा कर सकते हैं क्योंकि आपने प्रभु के वचन को अस्वीकार कर दिया है। उसने तुम्हें राजा के रूप में अस्वीकार कर दिया है। वहां पत्राचार देखें.

आप प्रभु को अस्वीकार करते हैं, वह आपको अस्वीकार करता है। तुमने यहोवा के वचन को अस्वीकार कर दिया है , उसने तुम्हें राजा के रूप में अस्वीकार कर दिया है। तब शाऊल ने शमूएल से कहा, अच्छा, वह जानता है, कि मैं इस विवाद में जीत नहीं सकता, और वह कहता है, मैं ने पाप किया है।

अत: वह अपना पाप स्वीकार करता है। मैंने प्रभु की आज्ञा और आपके निर्देशों का उल्लंघन किया है, और अब हमें यहां एक नया तथ्य पता चला है। मैं उन लोगों से डरता था, और इसलिए मैंने उनकी बात मान ली।

मुझे आश्चर्य होता है कि क्या वे लोग सचमुच केवल बलि चढ़ाना चाहते थे, या वे इन पशुओं में से कुछ अपने पास रखना चाहते थे, लेकिन शाऊल उनसे डरता था। तुम जानते हो, हारून की तरह, जब इस्राएलियों ने उस पर दबाव डाला, और उसने सारा सोना आग में फेंक दिया, और देखो, यह बछड़ा निकल आया। अब मैं तुझ से बिनती करता हूं, मेरा अपराध क्षमा कर, और मेरे साथ लौट आ, कि मैं यहोवा की आराधना करूं।

वह अभी भी पूजा करने के प्रति जुनूनी है, और क्षमा मांगता है, और वह चाहता है कि सैमुअल उसका समर्थन करे, ताकि वह भगवान की पूजा कर सके। परन्तु पद 26 में शमूएल ने उस से कहा, मैं तेरे साय फिर न जाऊंगा। तुम ने यहोवा का वचन तुच्छ जाना है, और यहोवा ने तुम को इस्राएल का राजा होने से तुच्छ जाना है।

वह उसे दोहराता है. यदि आपने शाऊल को नहीं सुना, तो सुनिए। तब शमूएल जाने को मुड़ा, और शाऊल ने उसके बागे का छोर पकड़ा, और वह फट गया।

सैमुअल उसकी ओर मुड़ता है, और ये भविष्यवक्ता सबक सिखाने के लिए हमेशा तैयार रहते हैं। वे शिक्षण के क्षणों के लिए हमेशा तैयार रहते हैं। यह उनमें से एक है, और अपने फटे हुए लबादे के साथ, सैमुअल एक मुद्दा उठाने जा रहा है।

वह इसे एक उदाहरण के रूप में उपयोग करने जा रहा है। शमूएल ने उस से कहा, यहोवा ने इस्राएल के राज्य को फाड़ डाला है। जैसे तू ने मेरा वस्त्र फाड़ा है, वैसे ही यहोवा ने आज इस्राएल का राज्य तुझ से छीन लिया है, और इसे तेरे एक पड़ोसी को, अर्यात् तुझ से अच्छे को दे दिया है।

इस बिंदु पर, हमें एहसास होता है, ठीक है, यह पड़ोसी, यह आपसे बेहतर है, शायद वही है जिसे पहले भगवान के दिल के अनुसार आदमी के रूप में संदर्भित किया गया था, लेकिन हम अभी तक नहीं जानते कि यह कौन है। इस विशेष मामले में, हम अगले अध्याय में बहुत जल्दी यह सीख लेंगे कि यह कौन है, यह इसके साथ-साथ चलता है। अत: वह जो इस्राएल का गौरव है, वह झूठ नहीं बोलता या अपना मन नहीं बदलता, क्योंकि वह मनुष्य नहीं है और उसे अपना मन बदलना चाहिए।

अब, यह दिलचस्प है क्योंकि यहां इस्तेमाल की गई क्रिया पुराने नियम में कई बार इस्तेमाल की गई है, जहां भगवान अपना मन बदल देते हैं। वह नरम पड़ गया. वास्तव में, योना अध्याय 4 में योना परमेश्वर से कहता है, मुझे पता था कि ऐसा होगा।

मैं जानता था कि नीनवे के लोग पश्चाताप करेंगे, और आप उन्हें बंधन से मुक्त कर देंगे और उनका न्याय नहीं करेंगे क्योंकि आप उसी तरह के भगवान हैं। आप उस प्रकार के भगवान हैं जो आम तौर पर अपना मन बदल लेते हैं, जो लोगों के पश्चाताप करने पर निर्णय भेजने से पीछे हट जाते हैं। जोएल अध्याय 2 में, आप इसकी पुष्टि भी देखते हैं।

भविष्यवक्ता ने ईश्वर को ऐसे व्यक्ति के रूप में वर्णित किया है जो आम तौर पर अपना मन बदलता है। ऐसे कई मामले हैं जहां भगवान ऐसा ही करते हैं। वह नरम पड़ गया.

उसका मन बदलना सबसे अच्छा वाक्यांश नहीं हो सकता है, क्योंकि यह बताता है कि ईश्वर अनिश्चित है, लेकिन वह अपने इरादे की स्थिति बदल देता है। वह पश्चाताप के प्रकाश में उसे बदल देता है। तो, यह कौन सा है? क्या ईश्वर आम तौर पर नरम पड़ता है, या नहीं झुकता है? कुछ लोग इस तरह का एक अंश लेंगे और इसके साथ उन अन्य पाठों को पीछे छोड़ देंगे।

मुझे नहीं लगता कि यह सही है. मुझे लगता है कि हमें संदर्भों पर गौर करने की जरूरत है। आमतौर पर, भगवान नरम पड़ जायेंगे।

वह इसी तरह का भगवान है। वह एक क्षमाशील ईश्वर है जो दयालु है, और जब लोग पश्चाताप करते हैं, तो वह उन पर वह निर्णय देने से पीछे हट जाएगा जिसके बारे में उसने उन्हें चेतावनी दी थी। वास्तव में, भविष्यवाणी अक्सर लोगों को पश्चाताप की ओर प्रेरित करने के लिए बनाई जाती है ताकि भगवान नरम पड़ सकें।

इसलिए, ईश्वर के नरम पड़ने का मतलब यह नहीं है कि वह अपरिवर्तनीय है, या बदलने वाला ईश्वर है। नहीं, वह अपरिवर्तनीय रूप से दयालु है, और उस तरह का भगवान बनने के लिए, उसे नरम होना होगा। लेकिन ऐसे भी समय होते हैं जब लोग सीमा पार कर जाते हैं, और तब भगवान फैसला करते हैं कि न्याय आ रहा है, और वह इस प्रकार के बयानों को इस तरह के बयान के साथ चिह्नित करेंगे।

मैं ऐसा आदमी नहीं हूं कि अपना मन बदल लूं। ऐसा नहीं होने वाला है। मनुष्य बदल जाएगा, लेकिन एक समय आता है जब मैं निर्णय बदलने और निर्णय लेने से पीछे हटने को तैयार होता हूं, लेकिन कभी-कभी मैं निर्णय लेता हूं, नहीं, इसके लिए बहुत देर हो चुकी है।

और जब वह ऐसा करेगा, तो वह ऐसा कुछ कहेगा, और इस विशेष मामले में, नहीं, इस स्थिति में, यह एक इंसान की तरह नहीं होगा जो झुक जाएगा। मैं नहीं बदल रहा हूँ. यह आदेश दिया गया है.

अब तुम राजा नहीं बनोगे. तब शाऊल ने उत्तर दिया, मैं ने पाप किया है। वह इसे फिर स्वीकार करता है, परन्तु कृपया मेरी प्रजा के पुरनियों और इस्राएल के साम्हने मेरा आदर कर।

मेरे साथ लौट आओ, ताकि मैं तुम्हारे परमेश्वर यहोवा की आराधना कर सकूं। वह अभी भी इस पूजा के प्रति आसक्त है, हालाँकि ध्यान दें कि वह इस बिंदु पर माफ़ी नहीं माँग रहा है क्योंकि मुझे लगता है कि उसे एहसास है कि सैमुअल ने निर्णय भाषण को बिना शर्त और अपरिवर्तनीय के रूप में चिह्नित किया है। वह इसके निहितार्थ को समझता है, लेकिन फिर भी वह सैमुअल से अनुग्रह चाहता है।

अत: शमूएल शाऊल के साथ वापस चला गया, और शाऊल ने यहोवा की आराधना की, परन्तु शमूएल के मन में कुछ और ही था। शमूएल ने कहा, अमालेकियों के राजा अगोग को मेरे पास ले आओ। ध्यान दें कि शाऊल जाकर यह नहीं कहता, बेहतर होगा कि मैं अगोग को मार डालूं।

मैंने पाप किया है, इसलिए बेहतर होगा कि मैं उसके बारे में कुछ करूं। नहीं, नहीं, नहीं। इसलिए, वे अगोग को उसके पास लाते हैं।

वह कह रहा है, निश्चित रूप से मृत्यु की कड़वाहट अतीत हो गई है। वह सोचता है कि उसे बख्श दिया जाएगा, लेकिन सैमुअल इसे न्याय का मामला मानता है। तेरी तलवार ने स्त्रियों को नि:सन्तान कर दिया है।

हे दुष्ट अमालेकी, तू ने मनुष्योंको घात किया है, इस कारण तेरी माता स्त्रियोंके बीच निःसन्तान होगी। और शमूएल ने अगोग को गिलगाल में यहोवा के साम्हने मार डाला। तो, एक दुखद कहानी है।

कुछ महत्वपूर्ण सबकों के साथ हम देखते हैं कि शाऊल ने अपना सिंहासन खो दिया। अवज्ञा किसी व्यक्ति को ईश्वर द्वारा प्रदत्त विशेष विशेषाधिकार से वंचित कर सकती है। वही पाठ जो हमने अध्याय 13 में देखा था, जिसे हमने एली के साथ देखा था।

इसमें एक और महत्वपूर्ण सबक यह है कि भगवान धार्मिक औपचारिकता की तुलना में आज्ञाकारिता को अधिक प्राथमिकता देते हैं, और यह याद रखना महत्वपूर्ण है। वह वाकई में। मुझे एक समय याद है जब मैं और चर्च के कुछ अन्य नेता एक ऐसी महिला का सामना करने गए जो अपने पति के प्रति बेवफा थी, और उसने कहा, तुम लोग मुझे उपदेश देना शुरू मत करो।

हर दिन मेरी भक्ति होती है। खेद है। भक्ति, यह एक प्रकार की धार्मिक औपचारिकता है।

यदि आप स्पष्ट रूप से प्रभु की अवज्ञा कर रहे हैं, प्रभु का उल्लंघन कर रहे हैं तो इससे आपका कोई भला नहीं होगा। तो, आज्ञाकारिता, बलिदान नहीं। ईश्वर आज्ञाकारिता को प्राथमिकता देता है, धार्मिक औपचारिकता को नहीं।

और जब ईश्वर बिना शर्त, अपरिवर्तनीय रूप से निर्णय की घोषणा करता है, तो वह अपना आदेश नहीं बदलेगा। सौभाग्य से हम पापियों के रूप में, अक्सर जब हम पश्चाताप करते हैं तो वह नरम पड़ने को तैयार रहता है। लेकिन कुछ लोगों के लिए एक समय ऐसा आता है जब बहुत देर हो चुकी होती है।

और हम इसे इस विशेष परिच्छेद में देखते हैं। अब शमूएल उठकर रामा को चला गया। शाऊल गिबा में अपने घर जाता है, और पाठ कहता है कि जिस दिन तक शमूएल की मृत्यु नहीं हुई, वह शाऊल से दोबारा मिलने नहीं गया।

और शमूएल शाऊल के लिये विलाप करता रहा, और यहोवा को पछतावा हुआ, कि उस ने शाऊल को राजा बनाया। इसलिए, शाऊल के पाप ने शमूएल को बहुत दुःख पहुँचाया है, और इससे प्रभु को पछतावा हुआ है। हालाँकि, प्रभु ने उल्लेख किया कि उसके मन में शाऊल के लिए एक पड़ोसी, जो शाऊल से बेहतर है, का विकल्प था।

और हम अध्याय 16 में उससे मिलने जा रहे हैं। इसलिए, 1 शमूएल 16, प्रभु एक नया राजा चुनता है। और हम यह देखने जा रहे हैं कि प्रभु बाहरी दिखावे को नहीं, बल्कि आंतरिक चरित्र को प्राथमिकता देंगे, क्योंकि वह इस नए राजा को चुनेंगे।

अत: अध्याय 16 में यहोवा शमूएल से कहता है, तू कब तक शाऊल के लिये विलाप करता रहेगा, क्योंकि मैं ने उसे इस्राएल का राजा होने से तुच्छ जाना है? यह काफी समय से चल रहा है, लेकिन हमें आगे बढ़ने की जरूरत है। अपने सींग में तेल भरो और अपने मार्ग पर चलो। तात्पर्य यह प्रतीत होता है कि तेल अभिषेक के लिए है।

हम एक नये का अभिषेक करने जा रहे हैं। मैं तुम्हें बेथलहम के जेसी के पास भेज रहा हूं। मैंने उसके पुत्रों में से एक को राजा बनने के लिये चुना है।

परन्तु शमूएल ने कहा, मैं कैसे जा सकता हूं? यदि शाऊल को इसके विषय में पता चलेगा तो वह मुझे मार डालेगा। और आपको यह समझने की आवश्यकता है कि यात्रा उसे शाऊल के शहर से होते हुए ले जाएगी। और इसलिए, प्रश्न पूछे जा सकते हैं।

जैसा कि मैंने इस पर अपनी टिप्पणी में कहा है, 1 सैमुअल पर टीच द टेक्स्ट कमेंट्री, मामलों को जटिल बनाने के लिए, रामा से बेथलेहम तक की 10 मील की यात्रा पैगंबर को सीधे गिबाह के माध्यम से ले जाएगी। और इसलिए प्रभु इस पर कैसे प्रतिक्रिया देंगे? अगर मैं वहां से गुजरूं, तो वे मुझसे सवाल पूछेंगे। मुझे क्या बोलना चाहिए? मैं एक नए राजा का अभिषेक करने जा रहा हूं।

वे मुझे मार डालेंगे. इसलिये यहोवा ने कहा, एक बछिया अपने साथ ले जाओ, और कहो, मैं यहोवा के लिये बलि चढ़ाने आया हूं। तो ये तो धोखा है.

यिशै को बलिदान के लिए आमंत्रित करो, और मैं तुम्हें दिखाऊंगा कि क्या करना है। तुम्हें मेरे लिये उसी का अभिषेक करना है जिसका मैं संकेत करता हूँ। तो अंत में, भगवान कहते हैं, बस उसे बताएं कि आप एक बलिदान देने जा रहे हैं, जो सच है, लेकिन यह पूरा सच नहीं है।

और ये भ्रामक है. और इसलिए यह आपको आश्चर्यचकित कर सकता है, अच्छा, इसमें क्या है? क्या प्रभु कभी-कभी धोखे का समर्थन करते हैं? और सच तो यह है कि वह ऐसा करता है। मैथ्यू न्यूकिर्क की एक बहुत अच्छी किताब है जिसका नाम है जस्ट डिसीवर्स।

इस पुस्तक में, न्यूकिर्क ईश्वर के संबंध में धोखे के विषय का अध्ययन करता है। वह प्रत्येक परिच्छेद को उसके संदर्भ में देखता है और कुछ सिद्धांतों को विकसित करने का प्रयास करता है जब हमें पता चलता है कि धोखा नकारात्मक है, और अन्य अवसरों पर, यह तटस्थ या शायद सकारात्मक भी है। मामले का तथ्य यह है कि भगवान कभी-कभी धोखे को निर्णय के रूप में उपयोग करते हैं और कभी-कभी व्यक्ति अपनी अनैतिकता के कारण सत्य पर अपना अधिकार खो सकते हैं।

और इसलिए शाऊल एक भावी हत्यारा है, और उसने सत्य पर अपना अधिकार खो दिया है। उसने भगवान की अवज्ञा की है, और इसलिए भगवान को उसे धोखा देने और सच्चाई से वंचित करने में कुछ भी गलत नहीं लगता है। लेकिन अगर आप उस पूरे विषय के बारे में और अधिक पढ़ना चाहते हैं और यह देखना चाहते हैं कि इसका बहुत, बहुत गहनता से अध्ययन किया गया है, और मुझे लगता है कि मैं आश्वस्त तरीके से मैथ्यू न्यूकिर्क की किताब का समर्थन करता हूं, तो मैं आपको वह किताब सुझाऊंगा।

मैथ्यू न्यूकिर्क, जस्ट डिसीवर्स। अत: शमूएल ने वही किया जो यहोवा ने कहा था, और जब वह बेतलेहेम में पहुंचा, तो नगर के पुरनिये उससे मिलने पर कांप उठे। सैमुअल के बारे में कुछ डरावना है।

पैगंबर आते हैं. क्या वह किसी प्रकार का निर्णय सुनाने आ रहे हैं? क्या हम मुसीबत में हैं? और उन्होंने पूछा, क्या तुम शान्ति से आते हो? और शमूएल ने उत्तर दिया, हां, शांति से। मैं यहोवा के लिये बलिदान चढ़ाने आया हूँ, जैसा यहोवा ने उससे कहा था।

अपने आप को पवित्र करो और मेरे साथ यज्ञ में आओ। तब उस ने यिशै और उसके पुत्रोंको पवित्र किया, और उन्हें बलिदान में निमंत्रित किया। तो, हम यहां क्या कर रहे हैं, हम एक नए राजा के लिए ऑडिशन दे रहे हैं।

और जब वे पहुंचे, तब शमूएल ने एलीआब को देखकर सोचा, निश्चय यहोवा का अभिषिक्त यहां यहोवा के साम्हने खड़ा है। वह यिशै के बेटे एलीआब को देखता है, और वह लंबा है, वह शाऊल की तरह प्रभावशाली दिखता है। और इसलिए, सैमुअल इसी तरह सोच रहा है।

सैमुअल बाहरी दिखावे के बारे में सोच रहा है। और पद 7 में यहोवा उस से क्या कहता है, उस पर ध्यान दे। परन्तु यहोवा ने शमूएल से कहा, उसके रूप या कद पर विचार न करना, क्योंकि मैं ने उसे तुच्छ जाना है। परमेश्वर उन चीज़ों को नहीं देखता जिन्हें लोग देखते हैं।

लोग बाहरी दिखावे को देखते हैं. और वास्तव में हिब्रू पाठ कहता है, आँखों को देखो। परन्तु प्रभु हृदय को देखता है, कि भीतर क्या है।

लोग बाहरी चीज़ों को देखते हैं, विशेष रूप से इस मामले में आँखें। प्रभु हृदय को देखता है। इसलिए, जब हमने शाऊल को चुना था तब जो मानक इस्तेमाल किया गया था, उससे यहां एक अलग मानक है।

मुझे लगता है कि जब प्रभु ने शाऊल को चुना, तो उन्होंने निर्णय लिया, ठीक है , मैं शाऊल के माध्यम से लोगों को राजा की मांग करने के उनके गलत उद्देश्यों के कारण अनुशासित करने जा रहा हूं। और मैं उस प्रकार का राजा चुनने जा रहा हूँ जैसा वे चुनेंगे। इस बार नही।

तब यिशै ने अबीनादाब को बुलाया, और उसे शमूएल के साम्हने से जाने दिया। शमूएल ने कहा, प्रभु ने इसे भी नहीं चुना है। तब यिशै ने शम्मा को उसके पास से जाने दिया, परन्तु शमूएल ने कहा, यहोवा ने इसे नहीं चुना है।

यिशै ने अपने सात पुत्रों को शमूएल से आगे बढ़ाया। परन्तु शमूएल ने उस से कहा, यहोवा ने इन्हें नहीं चुना है। तब उस ने यिशै से पूछा, क्या तेरे यही सब बेटे हैं? खैर, वे अभी भी सबसे छोटे हैं, जेसी ने उत्तर दिया।

वह भेड़ें चरा रहा है। शमूएल ने कहा, उसे बुलवा भेजो। जब तक वह नहीं आ जाता, हम बैठेंगे नहीं।

मुझे आपके प्रत्येक पुत्र को देखना है। अत: उसने उसे बुलवा भेजा और उसे बुलवा लिया। उसका स्वास्थ्य बहुत अच्छा था और उसकी शक्ल-सूरत भी बहुत सुन्दर थी।

वास्तव में, पाठ कहता है कि वह सुर्ख आँखों वाला और दिखने में अच्छा था। तब यहोवा ने कहा, उठ कर उसका अभिषेक कर। यही तो है वो।

अत: शमूएल ने तेल का सींग लिया और अपने भाइयों के साम्हने उसका अभिषेक किया। और उस दिन से यहोवा की आत्मा दाऊद पर बलपूर्वक उतरती गई। लेकिन आइए इस विवरण पर वापस जाएं।

कथावाचक, वर्णनकर्ता, लेखक, भगवान को सुनने के तुरंत बाद क्यों कहते हैं, मैं दिल को देखता हूं, आंखों को नहीं, क्यों, जब डेविड घटनास्थल पर आता है, तो वह ऐसा क्यों कहता है? मैंने उससे यह कहने की अपेक्षा की थी, डेविड ईश्वर के हृदय के अनुरूप व्यक्ति था। दाऊद वह व्यक्ति था जिसका हृदय परमेश्वर के समक्ष शुद्ध था। और भगवान ने यही देखा।

नहीं - नहीं। यह ऐसा है जैसे, क्या आप सुन रहे हैं, कहानीकार? अच्छा, हाँ, मैं सुन रहा हूँ। मैं वही हूं जिसने आपको कहानी सुनाई थी।

वह डेविड की आंखों पर ध्यान केंद्रित करता है जैसे कि उसने सुना ही न हो। खैर, उसने सुना, जाहिर है। उन्होंने ही हमें ये सब बताया है.

तो, यहाँ क्या हो रहा है? मुझे लगता है कि इस पर लोगों की अलग-अलग राय है और उनमें से कुछ काफी मज़ेदार हैं। कुछ लोग कहेंगे, ठीक है, हाँ, भगवान हृदय को देखता है, लेकिन वह एक बदसूरत राजा भी नहीं चाहता है। मुझे नहीं लगता कि यहाँ यही दिख रहा है।

या कुछ लोग कहेंगे, हाँ, ईश्वर हृदय को देखता है, लेकिन बाहरी रूप, डेविड की प्रभावशाली विशेषताएं और उसकी अच्छी शक्ल ईश्वरीय आशीर्वाद का संकेत है। मुझे लगता है कि वे बात भूल रहे हैं। मुझे लगता है कि वर्णनकर्ता जो कर रहा है, उसमें कुछ पूर्वाभास है।

और मुझे लगता है कि सैमुअल पर अपने लेखन में वाल्टर ब्रूगेमैन ने इसे मेरे द्वारा देखे गए सर्वोत्तम तरीके से दर्शाया है। डेविड परमेश्वर के हृदय के अनुरूप व्यक्ति है, और परमेश्वर के लिए यही मायने रखता है। लेकिन डेविड में कुछ ऐसे गुण हैं जो उन्हें लोगों की नजरों में आकर्षक बनाते हैं।

और लोग डेविड को ग़लत नज़र से देख सकते हैं। वास्तव में, डेविड की सुन्दर उपस्थिति किसी दिन उसके लिए एक समस्या और प्रलोभन बन सकती है। यहां तनाव है.

डेविड ईश्वर के अनुरूप व्यक्ति है, लेकिन वह दिखने में भी बहुत अच्छा है। और एक अच्छे दिखने वाले व्यक्ति के रूप में, वह घमंड और उसके साथ आने वाली शक्ति के प्रति संवेदनशील हो सकता है। और मुझे यह बहुत विडंबनापूर्ण लगता है जब वह 2 शमूएल 11 में बतशेबा को देखता है।

उसका वर्णन इस तरह से किया गया है कि वह दिखने में बहुत सुंदर है जो काफी हद तक डेविड के यहां वर्णित तरीके से मेल खाता है। और इसलिए मुझे लगता है कि यह वर्णनकर्ता का कहने का तरीका है, हाँ, ईश्वर डेविड के अंदर जो देखता है उसके आधार पर चुनाव कर रहा है। लेकिन आपको यह समझने की जरूरत है कि डेविड में बहुत सारे मानवीय गुण हैं जो आकर्षक हैं और लोगों को गलत कारणों से उसकी ओर आकर्षित कर सकते हैं।

और यदि वह उसमें से कुछ पर ध्यान केंद्रित करता है, तो वह स्वयं मुसीबत में पड़ सकता है। इसलिए कभी-कभी आपकी ताकतें जो भगवान ने आपको उपहार में दी हैं, यदि आप उन्हें कमजोरियां बनने देते हैं तो समस्या हो सकती है। मुझे लगता है कि यहाँ यह उन्हीं पंक्तियों के अनुरूप है।

एक तनाव है जिसका वर्णनकर्ता परिचय दे रहा है। परन्तु शमूएल ने दाऊद का राजा के रूप में अभिषेक किया। डेविड को ऊर्जावान बनाने के लिए आत्मा उस पर शक्तिशाली रूप से आती है।

क्योंकि यदि आप पुराने नियम में एक सफल राजा बनना चाहते हैं, तो आपके पास प्रभु की आत्मा होनी चाहिए। अब शाऊल के पास आत्मा थी, परन्तु वह अधिकांश समय आत्मा के नेतृत्व का पालन नहीं कर रहा था। तो, ध्यान दें कि श्लोक 14 में क्या होता है।

अब यहोवा की आत्मा शाऊल पर से हट गई, और यहोवा की ओर से एक दुष्ट आत्मा उसे सताने लगी। तो, प्रभु क्या करता है वह शाऊल से उसकी आत्मा लेता है, और अब वह इसे दाऊद को देता है, और उसकी आत्मा के स्थान पर, वह शाऊल को पीड़ा देने के लिए उस पर एक दुष्ट आत्मा भेजता है। सामान्य धारणा यह है कि यह बुरी आत्मा किसी प्रकार की शैतानी इकाई है, और हो भी सकती है।

लेकिन यदि आप हिब्रू को देखें तो यह आवश्यक नहीं है। ऐसा इसलिए है क्योंकि जिस शब्द का अनुवाद बुराई के रूप में किया जाता है, वह कभी-कभी राह हो सकता है, कभी-कभी आपदा और निर्णय, आपदा, उस तरह की चीज़ के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है। तो, यह बस हो सकता है कि यह आत्मा शाऊल के अनुभव को पूरा करने के लिए भेजी गई हो।

दूसरे शब्दों में, वह न्याय करने के लिए भेजी गई आत्मा है, न्याय लाने के लिए भेजी गई आत्मा है। इसका तात्पर्य यह नहीं होगा कि आत्मा स्वयं दुष्ट है। इसे शाऊल पर विपत्ति और विपत्ति लाने के लिये भेजा गया है।

इसलिए, हम वास्तव में निश्चित नहीं हैं कि यहाँ इस भावना के साथ क्या हो रहा है। मुझे लगता है कि यह मान लेना गलत होगा कि यह एक राक्षस है। लेकिन किसी भी कीमत पर, आत्मा को शाऊल के विरुद्ध परमेश्वर के न्याय के एजेंट के रूप में भेजा गया है।

यहीं मुख्य बिंदु है. और फिर आने वाले छंदों में, और हमें यहां तेजी से आगे बढ़ना होगा, क्या होता है कि यह आत्मा शाऊल को पीड़ा दे रही है, और इसलिए उसके परिचारकों में से एक कहता है, हमें किसी ऐसे व्यक्ति को लाने की जरूरत है जो संगीत में अच्छा हो, कोई ऐसा व्यक्ति जो संगीत में अच्छा हो वीणा बजाओ, और जब दुष्ट आत्मा तुम पर आती है, तो हम वह संगीत बजा सकते हैं और तुम्हें शांत कर सकते हैं। और इसलिए शाऊल कहता है, हाँ, यह अच्छा लगता है।

जब मैं इस आत्मा से पीड़ित होता हूँ तो आप कोई ऐसा व्यक्ति क्यों नहीं ढूंढते जो मुझे शांति दे सके? और फिर नौकरों में से एक कहता है, ठीक है, मैंने सिर्फ उस आदमी को देखा है, जो बेथलहम के जेसी का बेटा है। वह वीणा बजाना जानता है। वह वास्तव में एक अच्छे संगीतकार हैं।

डेविड, इज़राइल के मधुर भजनकार, भजनों में हमारे पास प्रचुर मात्रा में संगीत है जो उन्होंने लिखा था। वह एक बहादुर आदमी है, और वह एक योद्धा है। अब शायद वह यहां थोड़ा समय से पहले बोल रहे हैं।

बाद में जब डेविड अगले अध्याय में शाऊल से मिलता है, तो आपको यह आभास होता है कि वह काफी हद तक एक चरवाहा है। उसे अपने भाइयों की तरह एक योद्धा के रूप में युद्ध में नहीं बुलाया गया था। तो, यह थोड़ा प्रोलेप्टिक हो सकता है।

यह चीजों का पूर्वानुमान हो सकता है, लेकिन अध्याय 17 में हमें जो पता चलता है वह यह है कि डेविड ने एक योद्धा की तरह बड़ी बहादुरी और कौशल का प्रदर्शन किया है। उसने अपने हाथों से शेरों और भालुओं को मार डाला है। उसने शेरों और भालुओं को तब मारा है जब उन्होंने भेड़ों पर हमला किया था।

तो हो सकता है कि उसने वास्तव में अभी तक किसी पलिश्ती का सामना नहीं किया हो, लेकिन हे, अगर वह शेर या भालू को मार गिरा सकता है तो मैं उस पर पैसा लगाऊंगा। मुझे लगता है कि वह औसत फ़िलिस्तीनी सैनिक, या शायद उस औसत से कम फ़िलिस्तीनी सैनिक के विरुद्ध सब कुछ ठीक करेगा, जैसा कि हम देखेंगे। वह अच्छा बोलता है और अच्छा दिखने वाला आदमी है।

देखो, यह फिर से वहाँ है। और प्रभु उसके साथ है. तब शाऊल ने यिशै के पास दूत भेजकर कहा, मैं चाहता हूं, कि तेरा पुत्र दाऊद आकर मेरी सेवा करे।

और इसलिए, दाऊद शाऊल की सेवा में प्रवेश करता है। और हम यहां जो देखते हैं वह यह है कि शाऊल उसे बहुत पसंद करता है। वह उसके कवच-वाहकों में से एक बन जाता है।

लेकिन फिर भी, हमें अध्याय 17 में पता चलता है कि डेविड इस तरह से काम करता है। वह शाऊल के लिए अंशकालिक वीणा वादक और कवच वाहक के रूप में काम करता है, लेकिन ऐसे अवसर आते हैं जब वह जेसी के घर वापस चला जाता है। और अध्याय 17 हमें यह बताता है।

कुछ विद्वान इसमें विरोधाभास देखते हैं। वे अलग-अलग विवरण देखते हैं कि दाऊद शाऊल से कैसे मिला। जब हम अध्याय 17 में पहुँचेंगे तो हम इसके बारे में और अधिक बात करेंगे।

लेकिन इस विशेष मामले में, डेविड कभी-कभी घर जाता है। तो, लेखक जो कर रहा है, वह मूल रूप से कह रहा है कि शाऊल को भगवान ने अस्वीकार कर दिया है। उसने अपना सिंहासन गँवा दिया है, अध्याय 15।

परमेश्वर ने उसकी आत्मा को उससे छीन लिया है और इस दुष्ट आत्मा को लाया है, वह आत्मा जो शाऊल पर न्याय लाएगी। इस बीच, उन्होंने डेविड को नए राजा के रूप में चुना, अपनी आत्मा डेविड पर रखी, और अब हम ईश्वर को संभावित रूप से जो करते हुए देखते हैं वह डेविड को शाऊल के पास शाही दरबार के करीब ला रहा है जहां प्रभु डेविड के करियर की शुरुआत कर सकते हैं। और इसलिए परमेश्वर दाऊद के हितों को बढ़ावा देने और शाऊल को नीचे लाने के लिए कार्य कर रहा है।

लेकिन अगला अध्याय जिसे हम देखेंगे वह हमारे अगले पाठ में अध्याय 17 है, जो शायद सैमुअल, डेविड और गोलियथ की किताबों में सबसे प्रसिद्ध अध्याय है, और निश्चित रूप से पूरी बाइबल में सबसे प्रसिद्ध अध्यायों में से एक है। यह एक लंबा अध्याय है और हम इसे कुछ

विस्तार से देखेंगे और मैं कुछ ऐसी बातें बताऊंगा जो इसके बारे में आपकी समझ में नई हो सकती हैं। मुझे नहीं लगता कि यह एक छोटे से दलित व्यक्ति द्वारा एक बड़े शक्तिशाली राक्षस को हराने का मामला है, क्योंकि यह भगवान का एक बुद्धिमान सेवक है जो भगवान पर भरोसा करता है कि वह उसे उन कौशलों को निष्पादित करने में मदद करेगा जो भगवान ने उसे पहले ही दे दिए हैं।

लेकिन अगले पाठ में इसके बारे में और अधिक जानकारी।

यह डॉ. बॉब चिशोल्म 1 और 2 सैमुअल पर अपने शिक्षण में हैं। यह 1 सैमुअल 15-16 पर सत्र 10 है। शाऊल ने अपना सिंहासन खो दिया, प्रभु ने एक नया राजा चुना।